229 P
807
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1302/10/71

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 807

891.431
C395

हिन्दी नवयुग ग्रन्थमाला का तृतीय पुष्प

ॐ

807

स्वराज्य-गीताञ्जली

Part-II

(दूसरा भाग)

326

रचयिता—

कविरत्न श्री चतुर्वेदी शैलेन्द्र जी गायन भूषण

सम्पादक—

साहित्याचार्य्य श्री पं० सोमदत्तजी शर्मा महोपदेशक

321/83

दुर्गाप्रसाद खत्री द्वारा—
लहरी प्रेस काशी में मुद्रित।

हिन्दी नवयुग ग्रन्थमाला का द्वितीय पुष्प

॥ ॐ ॥

वन्देमातरम्

स्वराज्य गीतांजली ।

(द्वितीय भाग)

रचयिता—

कविरत्न श्री चतुर्वेदी शैलेन्द्र जी गायन भूषण

संपादकः—

साहित्याचार्य्य श्री पं० सोमदत्तजी शर्मा महोपदेशक

प्रकाशकः—

"हिन्दी नवयुग" ग्रन्थमाला कार्य्यालय

काशी

—

प्रथमावृत्ति १००० } सर्वाधिकार स्वरक्षित है { मूल्य ।)

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 807
Date 21:12:71
GOVT. OF INDIA

निवेदन

प्रिय पाठको !

कुछ दिन पूर्व मैंने आपकी सेवा में "स्वराज्य गीताञ्जली" का प्रथम भाग प्रस्तुत किया था, जिसे समस्त महानुभावों ने अपना कर मेरे उत्साह को बढ़ाया है। बस यही कारण है कि मैं आज "स्वराज्य गीताञ्जली" का द्वितीय भाग भी आप महानुभावों को भेंट करने का दुस्साहस करता हूं आशा है प्रथम भाग की भांति इसे भी अपना कर मुझे उत्साहित करेंगे।

आपका

"शैलेन्द्र"

ॐ

स्वराज्य-गीताञ्जली

(द्वितीय भाग)

पंजाब अत्याचार

[डायर की होली १]

डायर ने कैसी होली मचाई।
अमृतसर जलियान बाग़ में गोली खूब चलाई।
बाल-वृद्ध कोऊ बचन न पायो शोणित धार बहाई॥
भूम गई डायरशाही॥ डायर०॥१॥ टेक
रङ्ग हुआ बदरङ्ग प्रजा का बम्ब वृष्टि बरसाई।
घेर घेर कर की मनमानी जल्लादी दरसाई॥
भूल गई नादिरशाही॥ डायर०॥ २॥
वृटिश न्याय का परिचय देकर शक्ति कृपाण चलाई।
दीन हीन भारत वासिन की दुर्गति खूब बनाई॥
लोग सब करत बड़ाई॥ डायर०॥ ३॥
स्वर्गाधिक जननी है कातर शरण आपकी आई।
मेरे सुत क्या पशु पक्षी हैं जो न होत सुनवाई॥
नाथ कहां देहु दुहाई॥ डायर०॥ ४॥

डायरशाही

[ग़ज़ल १]

हुकूमत ने तलाफ़ी की भी तो पंजाब में क्या की ।
कि तहकीक़ात हन्टर से कराई मारशल्ला की ॥
निहत्थों पर किये डायर ने फ़ायर इस तसलसुल से ।
कि मरने वाले चीख़ उट्ठे दोहाई है मसीहा की ॥
रियाया पर बहादुर फ़ौज बन्दूकें चलाती थी ।
सिपाही खून करते थे पहन कर वर्दियां ख़ाक़ी ॥
नहीं भूलेगा वह मैंदान बाग़ जालियां वाला ।
सरे इन्सान से गोरी फ़ौज ने खेली जहां हाकी ॥
करें फ़र्याद किससे अब सुनाये दर्द दिल किसको ।
हुकूमत भी हिमायत कर रही जोर बेजा की ॥

डायर का ज़ुल्म

[ग़ज़ल २]

डायर ने ग़म जदों को बेकस बना के मारा ।
पीरो जवां पै उसने गोली चला के मारा ॥
सर ये अमृत सर में जलियाने बाग़ है इक ।
वालिद को उसने उस जां बेटा दिखा के मारा ॥
डायर के हुक्म से ही जारी था मारशल्ला ।
इस हुक्म के बमूजिब कोड़ों उड़ा के मारा ॥
डायर की सिफ्त लिखता खूने जिगर सेकिशन् ।
हर शख्स याद रक्खे ऐसा सता के मारा ॥

पंजाब का अत्याचार

[ग़ज़ल ३]

हमको पड़े थे अपने तईं जानके लाले ।
जिसकी खुशी हो थैवंस दे अरमान निकाले ॥
घरके चिराग़ बुझ गये जो करते उजाले ।
लाचार पड़े आज हैं बेदर्दों के पाले ॥
नामर्द डायरान के जुल्मों जनून से ।
अबतक ज़मी हैं तर मेरे बच्चों के खून से ॥
जर्मन थे या अफगान थे या कोई ग़द्दर था ।
हथियारबन्द फौज को क्या खौफो खतर था ॥
बिचारे हिन्द बच्चों पै जो जुल्मो कहर था ।
गमसे झुका उसी के लिये सत्य पै सर था ॥
उनपै चलाई गोलिया लानत है जोमपर ।
थूकेगा सब जमाना इस हरकत से कौमपर ॥
यूरुप की शान जाती थी जब आनके बदले ।
बो वक्त मुसीबत दिये सामान के बदले ॥
किसको ये खबर थी कि ज़रा जान के बदले ।
बरसेंगे हम पै गोले उस अहसान के बदले ॥
पढ़लीजे कारनामे इस शाइस्ता कौमके ।
जलियान वाले बाग में खूं से लिखे हुये ॥

पंजाब अत्याचार के समय एक शहीदाने वतन के विचार

[कव्वाली ४]

मुट्ठी भर खाक शहीदा हूं उठाने आया।
चश्मे वातिन का इसे सुरमा बनाने आया॥ १॥
खून गाढा हुवा हिन्दू मुसलमाँ क जहाँ।
अश्क खूं नाव की इकं बून्द गिराने आया॥ २॥
हम बग़ल ज़म ज़मों गङ्गा हुइं अमृतसर में।
दिल को इस चश्मये हैवां में निन्हाले आया॥ ३॥
मरके देखा ही न हो जिसने मसीहा कैसा।
गुरु मसीहाई का ईसा को सिखाने आया॥ ४॥
मर चुका था जो खमीरे गिले आदम उसको।
गूंद कर ख़ाक शहींदा में उठाने आया॥ ५॥
गोलियाँ पार हुई सीनों के लेकिन न हटीं।
जिनकी छाती उन्हें छाती से लगाने आया॥ ६॥
तिशना लब खाक रही प्यासों ने दम तोड़ दिया।
इस जाली रँग को दो आसुं पिलाने आया॥ ७॥
मां सपूती हुई बीबी को मुबारिक हो सुहाग।
सुर्ख जोड़ा कोई नोशे को पिन्हाने आया॥ ८॥
मुक्ती मुश्किल थी मगर इश्क ने आसाँ करदी।
कोई असनान वैसाखी का कराने आया॥ ९॥
क्या मिला मैात का मर मर के थे जीते सादिक़।
डायर औतार था भारत को जिलाने आया॥१०॥

भारतमाता की फ़रियाद

[सोहनी ५]

वह असीरे दाम बला हूं मैं जिसे सांस तक भी न आसके।
वह कतीले खंज़रे ज़ुल्म हूं जो न आंख अपनी फिरा सके॥
मेरी दुश्मनी पै हज़ार हैं भरे ख़ातिरों में गुबार हैं।
मेरे दिल में ज़ख्म हजार हैं इन्हे कोई कैसे दिखा सके॥
मुझे आसमां से मिटा दिया मुझे हर नजर से गिरा दिया।
मुझे ख़ाक ही में मिला दिया कि न हाथ कोई लगा सके॥
मेरे लम्बे बरछों को क्या हुआ वह कड़ी कमां को ज़ह किया।
मुझे थोते तीरों पै रखदिया कभो इकनिशां न उड़ा सके॥
मेरे शूरवीर कहां गये मेरे किलेगीर कहां गये।
मेरे मोहे मुनीर कहां गये जो पलट के ना अभी आ सके॥
न वह दिल्ली है न वह आगरा न विहार है न वह मालवा।
जो है नग्र उजड़ा पड़ा हुआ नये सर से कौन बसा सके
मेरा हिन्दकुश हुआ हिन्दकस वह हिमालिया हैं दिवालिया।
मेरे गंगा यमुना उतर गये आब इतना है न नहा सके॥
मेरे ऊंचे ऊंचे जो कोट थे वह हैं अब जमी से मिले हुए।
वहां उल्लू आके हैं बोलते जहां बाज़ पर न हिला सके॥
वह तख्त जिसपै कि मोर था वह जहां में जिसका कि शोर था।
उसे छीन छान के ले गये यही जोर मुझपै जता सके॥
न वह माला मोतियों की मेरी न वह छत्र सर पै धरे हुए।
मेरे बाल ख़ाक में पड़े हुए नहीं इतना कोई धुला सके॥
मेरा कोहे नूर छिपालिया उसे टुकड़े करके उड़ादिया।
मुझे हर तरह से गिरादिया कि नजर में यह न समां सके॥

मेरे बच्चे भीख हैं मांगते इन्हे टुकड़ा रोटी का कौन दे।
जहां जांय कहीं सब परे परे न कोई पास इनको बिठा सके॥
मेरे लाल जो कि सिखाते थे वही अब हैं औरों से सीखते।
ये खुदा की शान तो देखिये मेरी बिगड़ी कौन बना सके॥
शैलेन्द्र" इनकी बाँसुरी न रहे किसी की न है रही।
यह बड़ी फ़िसलनी जमीन है यहां पांव कौन टिका सके॥

भारतमाता की फरियाद

[कव्वाली ६]

मेरे ग़म की है कहानी इसे किस्सा ख्वां न समझो।
अभी सुनके रोपड़ोगे इसे दास्तां न समझो।
बड़े शौकसे उड़ा दो मेरे तन के टुकड़े टुकड़े।
न रुकेगा जज्बये दिल मुझे बे ज़ुबाँन समझो॥
न जिगर में आग भड़की न कलेजा जल रहा है।
ये गुब्बार आहे दिल है मेरी जा धुआं न समझो॥
कभी औज है किसी को कभी है किसी को पस्ती।
ये फ़लक की गर्दिशें हैं दौरे ज़मां न समझो॥
मेरे लाल आंख खोलो ज़रा हाथ मुंह को धोलो।
न जगे तो अपनी हस्ती जेरे आस्मा न समझो॥
वोही कोहे नूर शोहरा जिसका था कुल जमींपर।
है ज़हान में अभीतक मुझे बे निशां न समझो॥
वोही रोब शान शौकत वोही जलाल अपना।
हूं ज़ईफ़ लाख लेकिन अभी ना तवां न समझो॥
न मचलिये हजरतेदिल ज़रा सब्र कीजियेगा।
ये तो नाज़ हो रहे हैं इन्हे सख्तियाँ न समझो॥

भारत सन्तानों के प्रति भारत माता का विलाप

[लावनी ७]

यदि मेरी सन्तति आज सुसन्तति होती,
यह कह कर माता बिलख २ है रोती ॥
हे सभ्य सु पुत्रो ! मेरा जो कहना है,
तुम सुन लो देकर ध्यान अगर सुनना है।
यदि मेरी प्रिय सन्तान तुम्हें बनना है,
और मेरा जीर्णोद्धार अगर करना है।
तो पतित दास हो क्यों गौरव है खोती ॥ यदिमेरी ॥
स्वत्व स्वतंत्रता सदा बका करती है,
पर पारतन्त्र का मंत्र जपा करती है।
हा ! दास वृत्ति के लिये मरा करती है,
सम्पत्ति आसुरी चैन किया करती है।
मेरे विरुद्ध क्यों गरल बीज है बोती ॥ यदि मेरी ॥
प्रत्यक्ष तुम्हारी मूर्त्तिमति कर्त्री हूं,
प्राकृतिक सिद्ध आधार बनी धर्त्री हूं।
हा भक्ष्य बनस्पति रूप बनी भर्त्री हूं,
देकर सुवस्त्र परिधेय क्लेश हर्त्री हूं।
मैं ही सब बिधि से उपादेय हूं होती ॥ यदि मेरी ॥
"शैलेन्द्र" तुम्हारी कुछ भी नहीं निपुणता,
जिसके अब यब में एक न मेरी सत्ता।
उसको ही दी है तुमने हाय ! महत्ता,
क्या यही देश प्रियता है वा विद्वत्ता।
अच्छा होता यदि मृत्यु गोद में सोती। यदि मेरी ॥

[मात्र सान्त्वना ८]

मादरे हिन्द उठ मत वेदार हो।
रूख से आँसू पोंछ मत वेज़ार हो ॥
तेरे फ़रज़न्दों ने दिल में ठान ली।
जान तक दे देंगे गर माता तुझे दरकार हो ॥

[राग विहाग ६]

जननि मति होवे अधिक अधीर—
क्यों तू विलख २ रोती है और बहाती नीर।
मोहन मोतीलाल कमर कसि हरत तुम्हारी पीर ॥
कारागार कठिन दुःख झेलन करमचन्द सम वीर।
अब तेरा उद्धार निकट है शान्ति गहो माँ धीर ॥
हो नृशंश नौकर शाही हा! अन्य प्रखर तर तीर।
लक्ष तुम्हें करि बेधि रही है चोट सहित गम्भीर ॥
जीर्ण शरीर है तदपि सहो तुम वंस हैं इनका अखीर।
निश्चय है हम कहे देते हैं अन्त ? अन्त ? धर धीर ॥
सेवा तेरी करने को हम तत्पर हैं स शरीर।
मातु तेरा "शैलेन्द्र" खड़ा है जिसे न भय ज़न्जीर ॥

मातृसान्त्वना भविष्यबाणी

[भजन १०]

अरीमा ? धीरज क्यूँ न धरै
एक सहस्र नौ सो के ऊपर ऐसो जोग परै
बोसी रुद्र होहिं गत जबहीं ब्रह्म प्रकाश करै

मेघनाद रावण के बेटा पूरब जन्म धरै
पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण महि पर राज्य करै
तुरक तेज को ऐसो नाशै जैसे कीच जरै
फूटे वंश मलेक्ष राज्य को चहूँ दिशि दुन्द करै
कछु दिन बीते फौज बिगरि है चहूँ दिशि गदर मचै
फिर कै राज्य फिरंगी होइ हैं आपुहि आप गरै
भूप उपाय करैं सब मिलकर टारे तेऊ न टरै
दक्षिण फौज बहुरि जब आवे कुछ दिन राज्य करै
कुछक दिना में ऐसो होवे आपहि आप मरै
काल अकाल बोच माँ परि हैं दुनियाँ विकल परै
हा २ कार पृथ्वी पर होइ हैं चहुं दिशि काल परै
एक सहस्त्र नौसो सत्तावन ऐसो जोग परै
हलधर सुत भारत में उपजे दिल्ली छत्र धरै
छठ सोमवार तिथि उजियारी आनन्द जोग परै
ताहि समय एक बालक जन्में निश्चरि राज्य हरै
असो बरस में सतयुग आवै धर्म की बेल वढ़ै
नीति धर्म आचार होंहि शुभ आनन्द सिन्धु भरै
शाह अकबर मैं तुम्हें सुनाऊँ ऐसो ख्याल परै
भविष्य पुराण वेद अस भाखत ऐसो ध्यान परै
सूरदास यह श्याम की माया टारेहु नाहिं टरै

[कव्वाली ११]

ना सही अब न सही तेरा फिसाना भारत।
आने वाला है मगर तेरा ज़माना भारत॥
भूल जायेंगे सभी गम का फसाना भारत।
मिलके आनन्द से गायेंगे तराना भारत॥

तुझको आज़ाद बनायेंगे महत्तमा गान्धी ।
रंज दिल में न किसी बात का लाना भारत ॥
विश्व का तुझको तिलक कर गये दुनियां में तिलक ।
मोती भर देंगे जवाहर से ख़ज़ाना भारत ॥
लाजपत ध्यान तेरी लाज़ का रखते हैं सदा ।
तेरे ही वास्ते फिर जेल में पहुंचे भारत ॥
तेरी शौकत के लिये कैद में पहुंचे शौकत ।
साथ में हो लिये भाई भी रवाना भारत ॥
सत्य पर तेरे लिये सत्य ने बांधी है कमर ।
अब हुआ झूठ कोई दममें खाना भारत ॥
किचलू कुचलेंगे जो आयेगी मुसीबत तुझपर ।
अब श्रद्धानन्द से मस्ताना बनेगा भारत ॥
प्रेम जल से तेरे उपवन को सदा सींचा है ।
कष्ट को दास ने भी कष्ट न माना भारत ।
आह दिन कर की जलाने का असर रखती है ।
भूल जायेंगे सितमगार सताना भारत ॥

[मातृ सन्त्वना १२]

भारत जननी तेरी जय तेरी जय हो ॥
तू शुद्ध अरुबुद्ध तू प्रेम आगर,
तेरी विजय सूर्य्य मातः उदय हो ॥ १ ॥
हो ज्ञान सम्पन्न जीवन सफल हो,
सन्तान तेरी अखिल प्रेम मय हो ॥ २ ॥
हो वीर अरु धीर सन्तान तेरी,
हो सत्य पथ ग्राहि सबसे अभय हो ॥ ३ ॥

हों भीष्म से बीर अर्जुन सरिस धीर,
अकबर शिवाजी का फिर से उदय हो ॥ ४ ॥
गांन्धी रहें और तिलक फिरसे आयें।
अरबिन्द लाला विपिन का उदय हो ॥ ५ ॥
शौकत का संकल्प पूरा करें ईश,
बिघ्न और बाधा सभी का प्रलय हो ॥ ६ ॥
तेरे लिये जेल हो स्वर्ग का द्वार,
बेड़ी के भन २ में वीणा का लय हो ॥ ७ ॥
आवे पुनः कृष्ण देखें दशा तेरी,
सरिता शरों में भी बहता प्रणय हो ॥ ८

भारत वीरों का कर्तव्य

[कर्मयुग १३]

आ गया है कर्मयुग कुछ कर्म करना सीखलो।
देशपर अरुजाति पर हंस २ के मरना सीखलो ॥
मारने का नाम मत लो पहिले मरना सीखलो।
मिस्ले आयरलेन्ड दबकर फिर उभरना सीखलो ॥
पार यदि होना तुम्हें परतंत्रता दुःख सिन्धु से।
तैर कर तो रक्त सागर से उतरना सीखलो ॥
फिर जला दोगे सकल संसार को क्षण मात्रमें।
देश दुःख की आग में तुम पहिले जलना सीखलो ॥
तीर्थ यात्रा के लिये दिन रात उत्साहित रहो।
कृष्ण जन्म स्थान में निर्भय बिचरना सीखलो ॥

देखना है दृश्य भारत वर्ष में यदि स्वर्ग का।
तो प्राण पन से दुःख सब हरना हटाना सीखलो॥

क्या अब भी न जागोगे

[कवित सप्तम १४]

कैसी नींद सोये हैं हमारे देशवासी हाय,
खोलते न नैन हाथ पाँव न हिलाते हैं।
सोये पाँच सहस्र वर्ष तौहूं ना नींद खुली,
चोर डाकू घर में घुसे सब चैन पाते हैं॥
नींद ही में देश के विदेशी बादशाह भये,
राजन के राजा सो गुलाम कहे जाते हैं।
जागो वीर जागौ वीर नींद को विसार शीघ्र,
"इन्द्र" तुम्हें गांधी से पहरुआ जगाते हैं॥ १॥
बुद्धदेव बुद्धिमान शङ्कर कल्याणकारी,
मूलशङ्कर ब्रह्मचारी तुमको जगा गये।
राजा राममोहन ने मोह कियो प्यारे भ्रात;
गोखले हूं गोरस दै आगसी बुझा गये॥
दादाभाई नौरोज़ी नव २ उपदेश करि,
"इन्द्र" तुम्हें ऊँचनोच सारी सुझा गये।
कैहूबार जेल जाइ 'तिलक बालगंगाधर,
तिलक करि गीता को हाथ में गहा गये॥ २॥
नींद त्यागि जागि परौ ह्वैके सचेत सब,
दुर्दशा मिटाओ वीर बेगि देश भारत की।
बीतीकौ विचारु छाँड़ि ख़बरि लेहु आगे की,
कृष्ण वंश वालो भुजा शीघ्र गहौ आरत की।

छाई घनघोर घटा नाव पड़ी भँवर मांहि,
त्यारी हैं सारी ये तुम्हारे देश ग़ारत की।
खींचहु लंगोट बाट देखत है काको अब,
"इन्द्र" हां शरण शीघ्र लेहु पुरुषारथ की ॥ ३ ॥
उन्नति के पञ्चम स्वर भारत में गूँजि उठे,
गान्धी सुगन्ध पहुंची सर्व नासिकान में।
मोहि गये नारी नर सुनी जो सुरीली तान,
मुसल्मान हिन्दू सब एक भये आन में ॥
भारी हैरान भये गोरा गुमानी लोग,
आपुस में बात बतियान लगे कान में।
वाह बीर "इन्द्र" तेरी कहां लों बड़ाई करै,
ताक़त न एती अहैं तनकसी ज़ुबान में ॥ ४ ॥
ऐहो दुलारे वीर भारत के प्यारे तुम,
मानो एक बात तौ तुम्हारी सो कहेंगे हम।
एकता के साज सांजि ऐसे सब गान करौ,
गोरन के आजु ते गुलाम न रहेंगे हम ॥
भारत की लाज काज शीश पै जो आन पड़े,
आपदा कलेश दुःख सारे ही सहेंगे हम।
"इन्द्र" वीर गान्धी ने गैल जो बनाई ठीक,
होय गो कल्याण ताहि शीघ्र ही गहेंगे हम ॥ ५ ॥
द्रौपदि की लाज लई दुष्ट दुर्योधन ने,
केश पकरि दुश्शासन ताहि खींचि लायो है।
ऐसे कही चीर कू उतारि लेहु नङ्गी करौ,
एतौ पाप करत पापी नेक ना लजायो है ॥
ताहीं के बदले मे घोर संग्राम भयो,
भाई ने भाई मारि धरनि पै गिरायो है।

"इन्द्र" हाय भारत में सोई समै पहुंच्यो आय,
पाञ्चाली माता ने फेरि दुःख पायो है ॥ ६ ॥
दुर्योधन, ओडायर डायर से दुश्शासन,
बोसवर्थस्मिथ औतार फेर लीन्हों है।
धृतराष्ट्र चेम्सफोर्ड चक्षु फोरि बैठे रहैं,
ऐसे अन्याय पै बिचार हू न कीन्हों है ॥
माण्टेगू शकुनी ने हँसि हँसि कै बात टारी,
हण्टर रजाइवे कूँ हण्टर भेजि दीन्हों है।
"इन्द्र" ये समाज जुरेयो कौरव अन्यायिन को,
भारी विचारु करि हमने अब चीन्हों है ॥ ७ ॥

गफलत की नींद

[भजन १५]

इसनींद में बहुतेरे मिटे नाम और निशां।
भारतकी आज बाकी हैं मुश्किल से हड्डियां ॥
ज़रखेज जो कहाते थे वो सुनसान होगये।
राहत जहां थी रंज के सामान होगये ॥
इसनींद ही में राजेघराने तबाह हुये।
राजे मरे गुलाम गुलामान शाह हुये ॥
इसनींद हो में भाई से भाई जुदा हुआ।
बेटे का बैरी बाप हुआ खूब बरमला।
चेले गुरू का जोड़ फ़क़त ग़र्ज़ का हुआ।
राहत का साथ बाक़ी न यां रंज का रहा ॥
इस नींद ही में धर्म पै चोटे हुईं हजार।
ख़िलाफ़त पै क़ब्जा करलिया है काफ़रोंने आज ॥

मुँह ढांपे हुए जाते हैं ग़ैरों के कफ़न से

[कव्वाली १५]

बेगाना हुए अहले वतन अपने वतन से ।
उल्फ़त नहीं अफ़सोस अनादिल को चमन से
सौ जान से हम पोशिशे यूरुप पै बिके हैं ।
मानूस बदन अब नहीं मल्बूस वतन से ॥
अग़ियार की हर बात में हम दस्त जिगर हैं ।
बे बस हुए मोहताज हुए अपने चलन से ॥
नेकी व बदी की जो हो पहिचान तो देखें ।
आदम की तरह हम सभी नंगे हैं बदन से ॥
वह नंग वतन हम हैं कि मर कर भी अदन को ।
मुँह ढाँपे हुए जाते हैं गैरों के कफ़न से ॥

असहयोग रहस्य

[ग़ज़ल १६]

तब्दील गवर्नमेंट की रफ्तार न होगी ।
गर क़ौम असहयोग पै तैयार न होगी ॥
दुश्मन को असहयोग से हम ज़ेर करेंगे ।
इन हाथों में बंदूक या तलवार न होगी ॥
बन जायँगे हर शहर में जलियानवाले बाग़ ।
इस मुल्क से गर दूर ये सरकार न होगी ॥
ये जैल ख़ाने टूट के अब और बनेंगे ।
इन में तमाम क़ौम गिरफ्तार न होगी ॥
सौदाई हैं हम हमको दो लोहे की बेड़ियां ।
सोने के जेवरों मे ये झनकार न होगी ॥

वह कौन अमीरे वतन होगा भला जिसपर ।
हँस २ के फ़िदा जेल की दीवार न होगी ॥
कुछ मिलगये हैं ऐसे मुसलमान और हिन्दू ।
बस अब तमीज नसबी को जुन्नार न होगी ॥
हम ऐसी हुकूमत को मिटादेंगे मुत्ततरिब ।
ग़म में जो हमारे कभी ग़मख्वार न होगी ॥
जब तक के इसे खून से सींचेंगे नहीं हम ।
खेती वतन की दोस्तो गुलज़ार न होगी ॥

"असयोग कर दो"

[१७]

कठिन है परिक्षा न रहने कसर दो;
न अन्याय के आगे तुम झुकने सर दो ।
गँवाओं न गौरव नये भाव भर दो;
हुई जाति बेपर है तुम इसको पर दो ॥
असहयोग करदो असहयोग करदो ।
मनाते हो घर घर ख़िलाफ़त का मातम;
अभी दिलमें ताजा है पंजाब का गम ।
उन्हें दीखता है खुदा और आलम;
यही ऐसे ज़ख्मों का है एक मरहम ॥
असहयोग कर दो असहयोग कर दो ।
किसी से तुम्हारी जो पटती नहीं है;
उधर नींद उसकी उचटती नहीं है ।
अहम्मन्यता उसकी घटती नहीं है;
रुदन सुनके भी छाती फटती नहीं है ॥

असहयोग कर दो असहयोग कर दो ।
बड़े नाज़ोंसे जिन को माओं ने पाला;
बनाये गये मौत के वे निवाला ।
नहीं याद क्या बाग़े जलियानवाला;
गये भूल क्या दाग़े जलियानवाला ॥
असहयोग कर दो असहयोग कर दो ।
गुलामी में क्यों वक्त तुम खो रहे हो;
जमाना जगा हाय तुम सो रहे हो ।
कभी क्या थे पर आज क्या हो रहो;
वही बेल हर बार क्यों बो रहे हो ॥
असहयोग कर दो असहयोग कर दो ।
हृदय चोट खाये दबाओगे कब तक;
बने नीच यों मार खाओगे कब तक !
तुम्ही नाज़ बेजा उठाओगे कब तक;
बंधे बंदगी यों बजाओगे कब तक ?
असहयोग कर दो असहयोग कर दो ।
नजूमी से पूछो न आमिल से पूछो;
रिहाई का रास्ता न क़ातिल से पूछो ।
ये है अक्ल की बात आक़िल से पूछो;
"तुम्हें क्या मुनासिब है खुद दिल से पूछो"
असहयोग कर दो असहयोग कर दो ।
ज़ियादा न ज़िल्लत गवारा करो तुम;
ठहर जाओ बस वारा न्यारा करो तुम ।
न शह दो न कोई सहारा करो तुम;
फँसो पाप में मत किनारा करो तुम ॥
असहयोग कर दो असहयोग कर दो !

न कुछ शोर गुल के मचाने से मतलब;
किसी को न आँखें दिखाने से मतलब।
किसी पर न त्यौरी चढ़ाने से मतलब;
हमें मान अपना बचाने से मतलब॥
असहयोग कर दो असहयोग कर दो।
नहीं त्याग इतना भी जो कर सकोगे;
नदी मोह की जो नहीं तर सकोगे।
अमर हो के जो तुम नहीं मर सकोगे;
तो फिर देशके क्लेश क्या हर सकोगे॥
असहयोग कर दो असहयोग कर दो।
अगर चाहते हो कि स्वाधीन हों हम;
न हर बात में यों पराधीन हों हम।
रहें दासता में न अब दीन हों हम;
न मनुजत्व के तत्व से हीन हों हम॥
असहयोग करदो असहयोग करदो।
न भोगा किसी ने भी दुख भोग ऐसा;
न छूटा लगा दास्य का रोग ऐसा।
मिले हिन्दु मुसलिम लगा योग ऐसा;
हुआ मुद्दतों में है संयोग ऐसा॥
असहयोग कर दो असहयोग कर दो।

[कजरीं झऊर १८]

बज गई शान्ति मयी रण भेरी वीरो! हो जावो तैय्यार।
माता व्याकुल बाट जोहती करती खड़ी पुकार॥
तोप तीर बन्दूक़ आदि की नहीं यहाँ दरकार।
केवल तुम्हें सहन करना है सारा अत्याचार॥

राष्ट्र धर्म के लिये न आता अवसर वारम्वार ।
असहयोग का पर्व नहालो करो आत्मोद्धार ॥
अटल सिद्धि प्राकृतिक नियम है करलो खूब विचार ।
सत्याग्रह से न्याय युद्ध में पशुवल की ही हार ॥
कमर बाँध "शैलेन्द्र" बढ़ो अब होगा बेड़ा पार ।
करदो सिद्धि विश्व के आगे न्यायी जगदाधार ॥

अब भी चेतो

[भजन १९]

न कुछ माला दौलत न धन जायगा ।
फ़क़त साथ तेरे कफ़न जायगा ॥
न कुछ काम आवेगी दौलत न इज़्ज़त ।
फक़ीरी से कुछ काम बन जायगा ॥
कुछ आमाल अच्छे अगर साथ होंगे ।
तो रहमत से वाँ काम बन जायगा ॥
ये आंखे रसीली ये खुश रंग चेहरा ।
ये मिट्टी में गोरा बदन जायगा ॥
गढ़ा क़ब्र का हश्र और पुल सरात ।
ये रास्ता बड़ा ही कठिन जायगा ॥

[ग़ज़ल २०]

नेशन की इमारत कहीं मिस्मार न हो जाय ।
गुल्शन कहीं ये देखना पुर ख़ार न हो जाय ॥
देखो तवीबो कहने ही कहने में तुम्हारे ।
चलता कहीं जहाँ से ये बीमार न हो जाय ॥
है आरज़ू खुदाया इस रुये ज़मीन पर ।
कंजूसों खुद ग़रज़ कोई ज़रदार न हो जाय ॥

उल्फ़त दिखाबो ऐसी अछूतों से कि कोई ।
ईसाई यवन वनने की तैयार न हो जाय ॥
बे दाग़ जवानो रहे इखलाक तुम्हारा ।
तुम से कभी भी कोइ बुराकार न हो जाय ॥
तुम खिदमते हिन्दोस्तां हर्गिज़ न छोड़ना
जब तक किये हर मुल्क का सरदार न हो जाय

नौजवानों को चेतावनी

[ग़ज़ल २१]

देशके नामपर वीरों तुम्हें मरना नहीं आता ॥
लहू से कास ये तक़दीर को भरना नहीं आता ॥
छुरी से पेट फड़बाना तुम्हें आना नहीं प्यारो ।
कन्हैय्या की तरह क़ुरबान सर करना नहीं आता ॥
मुल्क की राह पर चलना तुम्हें अब हो गया मुश्किल ।
छुरी की धार टेड़ी पर क़दम धरना नहीं आता ॥
तुम हो औलाद शेरों की मगर अब बहरे हस्ती में ।
समय का फेर है सीधा तुम्हें तरना नहीं आता ॥
तवाही का तुम्हारी एक ही कारण है बसमित्रो ।
तुम्हें कहना तो आता है मगर करना नहीं आता ॥
मुसाफ़िर मरहवा सद मरहवा है तेरी हिम्मत को ।
मुल्क के काम में ओ नर तुझे डरना नहीं आता ॥

[भजन २२]

तुम्हारी यही आज पहिचान ।
देश भक्ति का नारा भरते, करो अनेकन काम ।
देश करेगा आज परीक्षा, स्वावलम्ब स्वाभिमान ॥

धनी जनो निज वित्त लगादो, बली लड़ादो प्राण।
विद्वानों निज बुद्धि लगाकर, रखो हिन्द की शान॥
कष्ट अनेकन होंय भले ही, सहलो फूल समान।
तुच्छ प्राण यदि जाँय तो जाँय, जाय न अपना मान॥
तजहु खान अरु पान बन्धु गण, तजहु ऐश मतिमान।
रक्षा करहु मातृ भूमीको जीना हो आसान॥
क्षमहु चूक अपराध महाप्रभु, धरूँ तुम्हारो ध्यान।
दीन हीन "शैलेन्द्र" दास तब पड़ो द्वार पर आन॥

नौजवानों को उपदेश

[ग़ज़ल २३]

दिल देदो मेरे दोस्तो भारत सुधार में।
आदत है मछलियों की चढ़े सीधी धार में॥
अब बुज़दिली का काम नहीं देश कार्य में।
करजाते काम करने वाले हैं हज़ार में॥
धन धन्य लोकमान्य ने करके दिखा दिया।
हम आपभी तो हैं उसी आलीतवार में॥
तन मन धन तुम दे दो देशी प्रचार में।
धब्वा न आने पाये कांग्रेस कार्य में॥
कहडाला जो कुछ आया मेरे विचार में।
आता नहीं था सब्र दिले बे क़रार में॥

नौ जवानों को उपदेश

[ग़ज़ल २४]

डंका बजादो दोस्तो गान्धी के नामका।
जीवन बनालो अपना कहीं अबतो कामका॥
अय नौजवानों आओ तो बलिदान के लिये।
सीना सिपर बनो कि है यह वक्त काम का॥
पुख़्ता ख़्याल अपने मिशन के लिये रहो।
शिकवा न करो दुश्मनोंकी अक्ले ख़ाम का॥
तुम जान दे दो देशकी रक्षा के वास्ते।
अब नाम मिटने वाला है रामो रहीम का॥
ढेले तुम्हें जो मारें उन्हे फल दिया करो।
अपना बनाओ तर्ज अमल नख़्ले आमका॥
तामील तुम किया करो राष्ट्रीय समाज की।
ख़ादिम तुम्हें बनाया है हर ख़ासो आमका॥
बत्तीस करोड़ हिन्दिओ बतलाओ तो सही।
फिर क्या बनेगा इतने बड़े अज़ दहाम का॥
जिसकी फ़ना के डरसे दुबकते हो फिर रहे।
ये जिस्म क्या है एक खिलौना है चामका॥

चेतावना

[ग़ज़ल २५]

गफ़लत को अबतो त्यागो हिन्दोस्तान वालो।
आखें उघार देखो भारतके नौ निहालो॥
सुनलो सदाये वह जो भारतमें उठ रही हैं।
चुस्ती का अब समय है सुस्ती निकालडालो॥

मुद्दत मदीद गुज़री ख्वारो ज़लील होते।
अब बुज़दिली का जामा तनसे उतार डालो॥
देखो जहां की कैसी रंगत बदल रही है।
इस वक़्त अपनी किस्मत तुम भी तो आज़मालो
मैंदा में जल्द आओ जौहर जरा दिखाओ।
हर्गिज न खौफ़ खाओ वे खौफ़ जान वालो॥
हुव्वे वतन दिखादो एसा करो अहद तुम।
मर जाओ पर विलाशक पीछे कदम न डालो॥
खुद गर्ज़ बागवां ने बीरां कीया है गुलशन।
अब अपना आशयाना अय बुलबुलो संभालो॥
आज़ाद होके भारत इज्ज़त जहां में पावे।
जाने न लाल पावे अब शान, शानवालो॥

वीर प्रतिज्ञा

[गज़ल २६]

ऐसी सभी क्या प्रतिज्ञा करेंगे,
कि हम सत्यपथ से नहीं अब हटेंगे।
होगी प्रखरधार तलवार की वार,
छूटे शतघ्नीनहिं अब डरेंगे॥
चाहे हमारा तिरस्कार भी हो,
नहिं किन्तु अब शस्त्र को हम धरेंगे।
निज रक्त से मातृ तर्पण किया जिसने,
हम भी उन्हीं का सदा अनुसरेंगे॥
स्वच्छन्द सब बन्धु करके विजय नाद,
माँ का विषम शोक निश्चय हरेंगे।

जो है देश का शून्य ये रत्न भण्डार,
उसको विविध यत्नसे हम भरेंगे ॥
"शैलेन्द्र" यश हिन्द इतिहास में हो,
अतः पूर्वजों के सदृश आचरेंगे ॥

वीर-वाक्य

[२७]

वीर भारत का पराक्रम विश्व को दिखलांयगे।
मातृ ऋण से मुक्त हो स्वर्गीय सुख हम पांयगे ॥ १ ॥
ज़ालिमों के ज़ुल्म, ऊधम, व्यर्थ अत्याचार का।
अन्त करके शान्ति की आभा अमल छिटकांयगे ॥२॥
प्राण प्रिय स्वाधीनता के समर में हम हैं डटे।
जान देकर भी दिलेरी से इसे अपनांयगे ॥ ३ ॥
धूल धूसर नग्न हो, मां रो रही बेज़ार है।
जिस तरह होगा उसे सुख सारियां पहनांयगे ॥ ४ ॥
देश के कोमल कलेजे में लगी जो चोट है।
उस जहर-मय जख्म को जड़ से मिटाये जांयगे ॥५॥
बेकशी से जिस लिये "प्यारा मदन" मारा गया।
शान से सीना उसी हित हम बढ़ाये जांयगे ॥६॥
दीन जन का व्यर्थ चूएगा पसीना भी जंहा।
खून की धारा लहरती, हम वहा उमड़ांयगे ॥ ७ ॥
स्वार्थ बश कुछ देश भाई शत्रु दानव हैं बने।
हार खा, आखिर पिघल कर मोम वे वन जांयगे ॥८॥
दीन आहें बज्र बनके चूर कर देंगी उन्हें।
जो हीं जालिम के पंजों से निकल कर आंयगे ॥ ९ ॥

दम न लेंगे, जङ्ग से पीछे हटेंगे हम नहीं।
ताकतें कितनी हैं, जालिम को अभी अजमांयगे ॥१०॥
शेर-बच्चों को दिखाते जेल, फांसी क्या भला ?
ना डरेंगे ! ना डरेंगे !! हां, भले मर जांयगे ॥ ११ ॥
धर घसीटो बेंत कोड़े बूट, गोली मारलो।
न्याय-हित आसन अभी हम ईश का थर्रायेंगे ॥१२॥
कोश लो जितना सको हम "आह"! बोलेंग नहीं।
बीर की करतूत मरते दम तलक दिखलांयगे ॥१३॥
देश हित मर अमर हो हम तो, रहेंगे सर्वदा।
जो घसीटेंगे हमें वे खुद घसीटे जांयगे ॥१४॥
सींच कर खूने जिगर से मात्रि- भू की बेदिको।
दानवों का दमन करने देव गुण प्रगटांयगे ॥१५॥
खोल दुख-जंञ्जीर, तोड़ेंगे गुलामी की कड़ी।
शान से "द्विज" विजय की प्यारी ध्वजा फहरांयगे ॥१६॥

[क़व्वाली २८]

डराते हो मुझे नादान क्यो अब जेल के डर से।
नहीं कुछ डर रहा मुझको रक़ीबो तेग़ो ख़ंजर से ॥ १ ॥
कमर बस्ता हुआ हूं मैं वतन के वास्ते जब से।
समझ रक्खा है ज्यादः चैन मैंने जेल में घर से ॥ २ ॥
गिरफ़्तारी का ले वारंट मेरे पास आओ तौ।
खुशी होगी निहायत पेश आऊँगा मैं ख़ातिर से ॥ ३ ॥
अभी लेकर छुरी दिल चाक करके देख लो मेरा।
रंगा हूं कौम के रंग में मैं भीतर औ बाहर से ॥ ४ ॥
राम का भक्त हूं हुब्बे वतन क्यों कर न मुझ को हो।
मिला है हुक्म मुझको इस तरहका अपने फ़ादरसे ॥ ५ ॥

तअल्लुक छोड़ दो गोरों से ऐ हिन्दोस्तां वालो ।
यही कहता फिरूंगा मैं वतन के हर बिरादर से ॥ ६ ॥
न करना ख़र्च हम पै वीरता ऐ वीरपाल अपनी ।
यही होगी नसीहत हिन्द के हरएक दिलावर से ॥ ७ ॥
हमारे इम्तिहां के वास्ते इंग्लेण्ड से भेजो ।
जो ज्यादा जुल्म कर सका हो डायर ओडावायर से ॥ ८ ॥
"इन्द्र" उठकर खड़े होंगे नसीहत सुनके मुर्दा दिल ।
मरों में ज़िन्दगी आ जायगी दुश्मन के फ़ायर से ॥ ९ ॥

देश सेवक के वीर वाक्य

[ग़ज़ल २९]

अब तो हम झोली गले डाल हुये बैठे हैं ।
दर पै माता तेरे अब साधु हुये बैठे हैं ॥
बिदेशी आयें लूटें व सताये हमको ।
हम तो इस द्वार पै कंगाल बने बैठे है ॥
भेज दो जेल में हमको अय भेजने वालो ।
कष्ट कुछ होगा नहीं तीर्थ समझ बैठे हैं ॥
आह निकलैगी नहीं फांसी चढ़ादे कोई ।
स्वर्ग का द्वार उसे माने हुये बैठे हैं ॥
लो सता तुम भी हमें शौक से आकर दुष्टो ।
सर से "शैलेन्द्र" कफ़न बांधे हुये बैठे हैं ॥

वीर प्रतिज्ञा

[ग़ज़ल ३०]

देश के वास्ते हम हम लाख तक़लीफें उठायेंगे ।
ज़रूरत गर पड़ेगी जान पर भी खेल जायेंगे ॥

बला से तीरबरसें और गर्दन पर चले ख़ंजर।
मगर रखकर क़दम आगे न हम पीछे हटायेंगे॥
देश महबूब है अपना है उसपर जिस्मो जां कुरबां।
मुख़ालिफ वार कर देखें न हम गर्दन हिलायेंगे॥
खुशी से गालियां सुनकर सहेंगे मार भी सब की।
न बाज़ आयें कभी हम सोते आलम को जगायेंगे॥
न डर है जेल का मुतलक़ न खौफ़े हतकड़ी हमको।
हुये गुमराह भाई उनको राहे हक पै लायेंगे॥
न ख़्वाहिश हमको इज्ज़त की न परवा कुछ है ज़िल्लत की।
जहां को जलवये असयोग धर्म सबको सिखायेंगे॥
व मिस्ले शामये महफ़िल मिटाके अपनी हस्ती को।
भुव कलिद देशका हम सारी दुनियां को बनायेंगे॥
इसी के वास्ते गान्धी ने भी सरबस्व वारा है।
कन्हैय्या की तरह अब "देव" भी सरको कटायेंगे॥

वीर प्रतिज्ञा

[३१]

मैं अपने मुल्क को हुब्बे वतन सिखाऊंगा।
गिरा है मुल्क मेरा फिर इसे उठाऊंगा॥
वतन के काम में मरने का गर सवाल आया।
तो सबसे पहिले मैं ही अपना सर कटाऊंगा॥
वतन की ख़ाक भी मिलजायगी कहीं मुझको।
बड़े अदब से मैं सरपर उसे चढ़ाऊंगा॥
हो शूद्र या कि बिरहमन व शेख या मिहतर।
करूँगा प्यार बराबर गले लगाऊंगा॥

पड़ी है कौम जो तारी किये जहालथ में ।
मैं बन चिराग़ उसे रोशनी दिखाऊंगा ॥
मैं पढ़के बन्देमारम् का मंत्र जीवन की ।
चरणों पै माता के पुष्पाञ्जलि चढ़ाऊंगा ॥
न मुझे तंग करो इस सराय दुनियाँ में ।
मैं तो "शैलेन्द्र हूँ ज्यादः न ठहर पाऊंगा ॥

बीर प्रतिज्ञा !

[ग़ज़ल ३२]

तैय्यार हैं हम आज कारागार जाने के लिए ।
जाके कारागार में ढेंकी चलाने के लिए ॥
तैय्यार हैं हम जेल में चक्की चलाने के लिए ।
कटिबद्ध हैं हम मूँज की रस्सी बनाने के लिए ॥
मंजूर सुरखी कूटना कोल्हू चलाना है हमें ।
तैय्यार हैं हम अधभुना दाना चबाने के लिए ॥
जांघिया कुरती कड़े में शर्म मुझको कुछ नहीं ।
तैय्यार हैं नंगे बदन जीवन बिताने के लिए ॥
जब तलक स्वाधीन भारत स्वर्ग में भी सुख नहीं ।
तैय्यार हैं हम नरक में जीवन बिताने के लिए ॥

एक नवयुवक की प्रतिज्ञा

[ग़ज़ल ३३]

अय मेरी जान भारत सेवा तेरी करूंगा ।
प्राणो के प्राण भारत दुखड़े तेरे हरूंगा ॥
जब तक कि दम में दम है तेरा ही दम भरूंगा ।
तेरे लिये जीऊंगा तेरे लिये मरूंगा ॥

आयेगी जो मुसीबत हंस खेलकर सहूंगा।
खिदमत में तेरी भारत बांधे कमर रहूंगा॥
तेरा गुलाम हूंगा खिदमत गुज़ारहूंगा
कहता हूं तुझसे अब भी फिर भी यही कहूंगा॥
तेरे लिये जीऊंगा तेरे लिये मरूंगा॥

देश भक्त की प्रतिज्ञा

[ग़ज़ल ३४]

अपना खूं अपने ही हाथों से वहाना है मुझे।
मादरे हिन्द पै सर भेंट चढ़ाना है मुझे।
मुश्किलो शौकसे आ २ के तमाशा देखो।
दौड मैदाने तरक्की में लगाना है मुझे॥
करते करते अब करना है बदन को फौलाद।
दिलको पत्थर से कहीं सख़्त बनाना है मुझे॥
अस्कहां के नही सुरमे की जरूरत मुतलक।
आंख में खाके वतन जब कि लगाना है मुझे॥
भूल जायेंगे सभी दैरो हरम के झगड़े।
देश सेवा का सवक याद कराना है मुझे॥
घुड़कियां देके डराते हो तुम किसको साहव।
नाम फेहिरिस्ते शहीदों में लिखाना है मुझे॥
एसी माता पै भला क्यों न फिदा हो जाऊं।
गोद में जिसकी एसे मर्ग भी जाना है मुझे॥
कौन किस्का है यहां प्यार करें फिर किस्को।
झूठी उलफ़त का निशां दिलसे मिटाना है मुझे॥
ख्वाहिशे वस्ले बुतां दिलसे निकालो फौरन।
तीरे अर्जुन को कलेजे से लगाना है मुझे॥

ARCHIVES LIBRARY
807
21.12.71
GOVT. OF INDIA

सर पै कायम तेरे "शैलेन्द्र" ईश की छाया।
मुल्क के वास्ते कुछ करके दिखाना है मुझे॥

वीर प्रतिज्ञा

[गज़ल ३५]

हँस २ के हमी हिन्द की इम्दाद करेंगे।
नाशाद बिरादर को हमीं शाद करेंगे॥
है खौफ हमें मौत का मुतलक़ न जहाँ में।
फिर क्या वो सितम बनिये वेदाद करेंगे॥
मुँह बन्द किया कैद किया खून बहाया।
अब और सितम कौन सा ईजाद करेंगे॥
हाकिम हो वही अदालत हो उसीकी।
हम ऐसी न सरकार से फरियाद करेंगे॥
मुआफी न कभी आप से मागेंगे जुबाँ से।
हम जेल को दिल खोल कर आबाद करेंगे॥
पर याद रहे लाल का कहना नहीं झूठा।
इक रोज हमीं हिन्द को आजाद करेंगे॥

वीर प्रतिज्ञा

[गज़ल ३६]

खिदमते मुल्क का जब दिल में ख्याल आयेगा।
खुद ब खुद पास चला हुनरो कमाल आयेगा॥
निकलेंगे बांध कफ़न सर से जो शैदाय वतन।
नज़र तब काम कोई कैसे मुहाल आयेगा॥

सबसे पहिले ही मैं मक़तल में पहुंच जाऊंगा।
जब वतन के लिये मरने का सवाल आयेगा॥
अपने जल्लाद की फिर २ मैं बलायें लूंगा।
खींचने ज़िन्दगी मैं गर मेरी खाल आयेगा॥
कुश्तये तेगे सितम हूंगा मेरे लाशे पर।
खून रोने के लिये माहे हिलाल आयेगा॥
बेकसी मेरी मनायेगी मेरा मातम—और।
ग़म मनाने के लिये रञ्जो मलाल आयेगा॥
आग लग जायगी खुद सोज़े वतन से मेरे।
लकड़ियां चार चितापर कोई डाल आयेगा॥
शोले उठ २ के चिता के मेरी दिखलायेंगे।
तब नज़र खल्क को भारतका जलाल आयेगा॥
बनके इंगलेन्ड मसीहा तूही मुर्दों को जिला।
वर्ना किसकाम तेरा हुस्नो जमाल आयेगा॥
साथ मक़तल में मुसाफिर को भी लेते जाना।
ये भी अर्मान वहां दिलके निकाल आयेगा॥

देश भक्त की उच्चाभिलाषा

[ग़ज़ल ३७]

वतन के वास्ते गर तू दिला कुर्बान हो जाये।
तो मुर्दा मुल्क में भी फिर से पैदा जान हो जाये॥
मचाओ आन्दोलन इस क़दर अपने हक़ूकों का।
कि जिसको देखकर संसार सब हैरान हो जाये॥
न तबतक तुम रहो खामोश प्यारो अपनी कोशिस से।
न जबतक देशका परतंत्रता से त्रान हो जाये॥

है तुफ़ ज़र पर हमारे मुल्क का गर एक भी बच्चा ।
तड़फ कर भूख से गर मौतका मेहमान हो जाये ॥
तुम्हारी ऊंचता किस काम की है जिससे घबड़ाकर ।
गौ रक्षक अगर मोची कोई कृस्तान हो जाये ॥
तरक्की दें अगर ज़रदार सनअत व हिरफ़त को ।
तो मुफलिस मुल्क ये सीमो तिलाकी क़ान हो जाये ॥
यहां के नौजवानों में अगर हो जोश मुल्की भी ।
तो भारतवर्ष की फिरसे दुबारा शान हो जाये ॥
सुफल जीवन तेरा "शैलेन्द्र" मक़सद तेरा पूरा हो ।
वतन के वास्ते गर जाँ तेरी कुर्बान हो जाये ॥

देश भक्त की उच्चाभिलाषा

[ग़ज़ल ३८]

मेरी जां न रहे मेरा सर न रहे, सामा न रहे न वे साज़ रहे ।
फकत हिन्द मेरा आज़ाद रहे, माता के सर पर ताज रहे ॥
पेशानी में जिसके सोहे तिलक, और गोद में गांधी बिराज रहे ।
न ये दाग बदन में सफेद रहे, न तो कोढ़ रहे न ये खाज रहे ॥
सिक्ख हिन्दू मुसलमा एक रहें भाई भाई सा रस्मो रिवाज रहे ।
गुरू ग्रन्थ कुरान पुरान रहे, मेरी पूजा रहे और नमाज रहे ॥
मेरी टूटी मढ़ैया में राज रहे, कोई गैर न दस्तन्दाज़ रहे ।
मेरी बीन के तार मिले हों सभी एक भीनी मधुर आवाज रहे ॥
वे किसान मेरे खुशहाल रहें, पूरी हो सफल सुख साज रहे ।
मेरे बच्चे वतन पर निसार रहें मेरी मां बहिनों में लाज रहे ॥
मेरी गायें रहें मेरे बैल रहे, घर घर में भरा सब नाज़ रहे ।
घी दूध की नदियां बहती रहें, हरसू आनन्द स्वराज रहे ॥

माधो की है चाह खुदा की कसम मेरे बाद वफात ये बाज रहें।
गाढ़े का कफन हो मुझपै पड़ा, बन्दे मातरम् अलफ़ाज रहें॥

एक शैदाये वतन का तराना।

[ग़ज़ल ३६]

अल्लाह मुझे गर कभी, ज़ेवर का शौक़ हो।
हाथों में हथकड़ी हों, गले में भी तौक़ हो॥ १॥
लग़्ज़िश न खाऊँ ज़िस्म पै, आफ़त हजार हो।
खिदमत में क़ौम की मेरा, ये सरनिसार हो॥ २॥
इज़्ज़त की ख़्वाहिश दिलमें न ज़िनहार हो मुझे।
चढ़जाऊँ वतन के लिये, गर दार हो मुझे॥ ३॥
धुन में वतन की हर घड़ी, करता सफ़र रहूं।
जाने के लिये जेल में, सीना सिपर रहूं॥ ४॥
हाकिम की वयां लिखने से, जब क़लम बन्द हो।
इज़हार हो मेरा यही, आज़ाद हिन्द हो॥ ५॥
ताक़त दे खुदा हिन्द को, आज़ाद करा दूँ।
या दुश्मनों के जेल को, आबाद करा दूँ॥ ६॥
फ़रहाद क़ैस का मुझे दर्जा नसीब हो।
मेरा वतन ही बस खुदा मेरा हबीब हो॥ ७॥
दुश्मन की गोलियों का हो, सीने पै निशाना।
गाता हो "इन्द्र" तब भी, वतनका ही तराना॥ ८॥

मेरी तावीर—वीर प्रतिज्ञा

[शेरें ४०]

नहीं साहसीं वीर कभी हैं धीरज खोते।
संकट में भी सदा एक रस दृढ़ चित्त होते॥

दुखसागर के पार नहीं खावें गोते।
त्यागें नहि कर्तव्य न भय लखि कबहुं रोते॥
या जग में लखि बिपति को जे नाहीं बौरे भये।
ते निज बुद्धि बल सहज ही खाई ख़न्दक तरि गये॥

[ग़ज़ल ४१]

ज़िन्दगी की गर मेरी दुनियां में ये तावीर हो।
हाथ में हों हथकड़ी और पांव में जञ्जीर हो॥
पेट में खञ्जर दुधारा और जिगर में तीर हो।
और गर्दन पै धरी जल्लाद की शमशीर हो॥
सूली मिले फांसी मिले चाहें मौत दामनगीर हो।
आगे मेरे रक्खी हुई वह मौत की तस्वीर हो॥
अलग़रज जो कुछ भी मुमकिन हो मेरी तहकीर हो।
देश की रक्षा हो लेकिन यह मेरी तक़सीर हो॥
मरते दम तक भी कहूंगा देश का शैदा हूं मैं।
मैं करूंगा काम गर दुनियां में फिर पैदा हूं मैं॥

मेरी अभिलाषा

[ग़ज़ल ४२]

अगर ज़िन्दा रहा कुछ दिन तो दुनियां को दिखादूंगा।
कि किसका नाम है हुब्बेवतन सबको सिखादूंगा॥
खुशामद मैं कभी सीखा नहीं इन्सान की करना।
सदाक़त पर बिलाशक हां मगर सरको कटादूंगा॥
खुशामद उनको भाती हैं जिन्हें है सर्वथा मतलब।
ये मक्कारी हैं हरेक ख़ानये दिल से मिटा दूंगा॥
चमन जो देश का अपने है मुर्झाया हुआ बिलकुल!
मैं अपने चश्मेतर से सींच कर गुलशन बनादूंगा॥

जमाना है मुआफ़िक की शिकायत मैं नहीं करता।
सदाक़त कलब से सोता हुआ भारत जगा दूंगा॥
फ़कत इज्ज़त की खातिर से जो देश द्रोह करते हैं।
वे दुश्मन कौम हैं दुनियां को धोखे से बचादूंगा॥
मेरा गर नाम कोई भी चाहे तहरीर में लाना।
मैं एक क़ौमी दीवाना हूं यह नाम अपना लिखादूंगा॥
अब नहीं है समय बातों के बनाने का।
जो सब को करना लाजिम है वही करके बतादूंगा॥

एक देश भक्त की हृदयाकाँक्षा

[ग़ज़ल ४३]

हम राहे हक़ीकत पै सर अपना कटा देंगे।
खंजर की तेरी आतश आवे खूं से बुझा देंगे॥
आसां न समझना तू हिन्दियों का मिटा देना।
मिट जांयगे हम ज़ालिम पै तुझको भी मिटा देंगे॥
जिन्दा हैं अगर जिन्दा दुनियां को हिलादेंगे।
मशरिक का सिरा लेकर मग़रिब से मिलादेंगे॥
हम कौन हैं हम क्या हैं हम कुछ भी नहीं लेकिन।
वक्त आने दो वक्त आने दो हम तुम को दिखादेंगे॥
हम झूठ नहीं कहते हैं समझे हो हमें तुम क्या।
अय! अहद शिकन यूरोप हम तुझको बतादेंगे॥
जल जायंगे हम खुद भी मिस्ले समां सोजां के।
आहों से बले तेरी हस्ती को जला देंगे॥
"शैलेन्द्र" स्वशक्ति से अब तुमको बता देंगे।
गरफ़ाश वे महशर में नख़वत को जगह देंगे॥

हम कौन हैं क्या कर सकते हैं ?

[ग़जल ४४]

मालूम नहीं कुछ दुनियां को हम कौन हैं क्या कर सक्ते हैं।
चाहें तो हकूमत जालिम की काफूर नशा कर सक्ते हैं॥
तौहीद की दौलत रखते हैं समझो न कोई मुफलिस हमको।
इकले हम हककी ताकत से वातिल को फतह कर सक्ते हैं॥
जिस इज्जन के हम तालिब हैं वह उक़्बा में मिल सक्ती है।
कुर्बान जहां को इज्ज़त को हम वहरे खुदा कर सक्ते हैं॥
हम मिटने पर आमादह हैं परवाह नहीं है कुछ इसकी।
ईजाद नया घर आप कोई अन्दाज जफ़ा कर सक्ते हैं॥
इस तरह से क्या मिट जायेगा यह सास सदाक़त दुनिया से।
माना की हमारी रूहों को इस तन से जुदा कर सक्ते हैं॥
वत्तीस करोड़ इन्सानो को नादानोंने समझा क्या है।
यह जोश में आकर दुनियां में एक हश्र वया कर सर सक्ते हैं॥
हक कहने में कब डरते हैं जो कहते हैं वह करते हैं।
हम कौल के अपने पक्के हैं जो कुछ भी कहा कर सक्ते हैं॥
काला काला क्या कहते हो गरकाले केंचुल धर देंगे।
फिर याद रहे फुसकार में ये काले स्वाहा कर सक्ते हैं॥

देश भक्तों के भाव

[ग़ज़ल ४५]

पसे मुर्दन भी होगा हश्रमें येही वयां मेरा।
मैं इस भारतकी मिट्टी हूं ये है हिन्दोस्ता मेरा॥
मैं इस भारत के इक उजड़े हुये खंडरर का ज़र्रा हूं।
यह है पूरा पता मेरा यही है कुल निशां मेरा॥

खिजां के हाथ से मुरझाये इस गुलशन के पौधे हैं।
मैं इस गुलशन की बुलबुल हूं यही है गुलसितां मेरा ॥
अगर यह प्राण तेरे वास्ते अय देश न जायें।
तो इस हस्ती के तख्ते से मिटे नामो निशा मेरा ॥
मैं तेरा हूं सदा तेरा रहूंगा वा वफ़ा ख़ादिम।
तूही है गुलसितां मेरा तूही जन्नत निशा मेरा ॥
मेरे सीने में तेरे प्रेम की ज्योती झलकती है।
निगाहों में मेरी भारत तूही है कुलजहां मेरा ॥

मन की आकांक्षा

[ग़ज़ल ४६]

निहाले हिन्द पै आसूं बहाते अपनी आखों से।
जो होते बागवां बूटे लगाते अपनी आखों से ॥
अगर जलता न लैम्पों में विदेशी तेल मिट्टी का।
न हम ऐनक जवानी में लगाते अपनी आखों से ॥
किया होता अगर दिलमें कोई नाला तो अय बुलबुल।
कहां गुलख़ार भी आंसू बहाते अपनी आखों से ॥
अभी दोनों ही पै आये नहीं हम अय फलक वर्ना।
ज़मी क्या आसमा को भी हिलाते अपनी आखों से ॥

हृदय तरंग

[ग़ज़ल ४७]

करने दे हे हृदय देशहित मुझे आत्म बलि करने दे।
मरने दे प्रिय जन्म भूमि के अर्थ मुदित हो मरने दे ॥
शुष्क हिन्द बनपर नयनों को निर्झर बनकर झरने दे।
करुण शीतल विश्वक्षेत्र की क्यारी २ भरने दे ॥

थड़ने दे अन्याय शत्रु को सन्मुख मेरे अड़ने दे।
लड़ने दे स्वेच्छाचारों से हृदय खोलकर लड़ने दे॥
"शैलेन्दर" पर असि प्रहार से बन्दि पतंगे झरने दे।
हां स्वदेश हित तन को कट २ कर भूतलपर गिरने दे॥

एक शैदाये वतन के विचार

[ग़ज़ल ४८]

हिन्द के दर्द की मैं कैसे दवा बनाजाऊं।
अय मसीहा तूही बता दे कि मैं क्या बनजाऊं॥
ज़ां ब लब मुल्क है गर अपनी तो है ये हविस।
मुल्क के वास्ते मैं आवे वफा बनजाऊं॥
वक्त मुश्किल तो कभी मागूं अमां से यारश।
बल्कि दिन ऐसा दे मुश्ताके जफ़ा बनजाऊं॥
अहदपर अपने मैं क़ायम रहूं तिलभर न हटूं।
मुस्तकिल दिलमें शिवाजी से सिवा बनजाऊं॥
मिस्ले आइने के साफ होवें बयानो मेरे।
रास्त गो शीरी सखुन गान्धी सा बनजाऊं॥
काम पड़जाय जो दुश्मन के मुकाबिल तो सदा।
तीर अर्जुन का बनूं भीम गदा बन जाऊं॥
मुल्क के वास्ते मैं त्याग करूं जो कुछ हो।
कारू बनने की हवस हो न गदा बनजाऊं॥
ख्वाब गफ़लत में बहुत मुल्क है अपना सोया।
जिससे वेदार हो मैं ऐसी दवा बन जाऊं॥
रातदिन फ़िक्र यह "शैलन्द्र" को रहती हरदम।
मुल्क़ को फायदा हो जिससे मैं वह बनजाऊं॥

एक शैदाये वतन के आदर्श विचार

[ग़ज़ल ४९]

मेरी नजरों में तो राजा न नवाब अच्छा है।
मुझको जो क़ौम दे ख़ादिम का ख़िताव अच्छा है॥
टैम्सराइन की नहीं भाती हैं लहरें मुझको।
मुझको मिलजाय जो गंगाका हुवाव अच्छा है॥
वायदे दैने के कर २ के मुकरते रहना।
कह दो कि देंगे नहीं बस ये जवाव अच्छा है॥
दिन ब दिन हो क्यों कसे जाते हो मज़लूमों को।
करना तुमको नहीं यह ज़ुल्मोताव अच्छा है॥
फ़ौजी कानून कहीं और कहीं रौलटबिल।
इस तरह करना नहीं हमको ख़राब अच्छा है॥
उम्र खोता है क्यों गप्पों से भरे पोथों में।
पढ़ले सत्यार्थ का जो एक भी बाब अच्छा है॥
ले ग़रीबों की खबर मुल्क की ख़िदमत कुछकर।
इससे बढ़कर न कोई और सबाब अच्छा है॥
खोके आज़ादी को आराम न हमको मतलूब।
इससे तो सरही ये उड़जाय शिताव अच्छा है॥
बढ़ते "शैलेन्द्र" चलो दूर अभी मंज़िल है।
जानते हो कि मुसाफिर को न ख्वाब अच्छा है॥

[ग़ज़ल ५०]

खौफ़ आफ़त से कहां दिल में रिया आयेगी।
बात सच्ची है जो वह लव पै सदा आयेगी॥

दिलसे निकलैगी न मरके भी सतन की उल्फ़त।
मेरी मिट्टी से भी खुशबूये बफ़ा आयेगी॥
ग़ैर जोम और खुदी से जो करैगा हमला।
मेरी इमदाद को खुद जाते ख़ुदा आयेगी॥
सामना सब्रो शुजाअत से करूंगा मैं भी।
खिचके मुफ़्तक जो कहीं तेग़े जफ़ा आयेगी॥
आत्मा हूं मैं बदल डालूंगा फ़ौरन चोला।
क्या बिगाड़ेगी अगर मेरी कज़ा आयेगी॥
मैं उठा लूंगा बड़े शौक से उसको सरपर।
ख़िदमते मुल्क में जो रंजो बला आयेगी॥
अब्रतर अश्क बहायेगा मेरे लाशेपर।
ग़म मनाने के लिये काली घटा आयेगी॥
खूब रोयेगी बमांपर मेरे मरने पै शफ़क।
ख़ाक उड़ाने के लिये काली घटा आयेगी॥
ज़िन्दगानी में तो मिलने से झिझकती है फ़लक्क।
ख़लक को याद मेरी वादे फ़ना आयेगी॥

सरफ़रोसी की तमन्ना

[ग़ज़ल ५१]

सरफरोसी की तम्मन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है ज़ोर कितना बाज़ुए क़ातिल में है॥
हेरबे राहे मोहब्बत रह न जाना राह में।
लज़्ज़ते सहरा न वर्दी दूर पै मंज़िल में है॥
आज फिर मकतल में क़ातिल कह रहा है वार वार।
क्या तम्मन्नाये शहादत भी किसी के दिल में है॥

अय शहीदे मुल्क वो मिल्लत है सब तुझपर निसार।
अब तेरी हिम्मत का चरचा गैरों की महफ़िल में है॥
वक्त आने दे वता देंगे तुझे अय आस्मां।
हम अभी से क्या बतावें क्या हमारे दिल में है॥
अब न पहिले बलबले हैं और अरमानों की भीड़।
सिर्फ मिटजाने की यक हसरत दिले बिसमिल में है॥

बातें बनावग नहीं

[ग़ज़ल ५२]

व्यर्थ जीवन की घड़ी बैठे बितावेंगे नहीं।
काम करने के समय बातें बनावेंगे नहीं॥
कात करके सूत हम पालेंगे निज परिवार को।
भूल करके भी कभी चरखा भुलायेंगे नहीं॥
भीख तक मांगगे अरु त्यागेंगे भूखे प्राण को!
पर मिनिष्टर औ वैरिस्टर जज कहावेंगे नहीं॥
पहन करके वस्त्र देशी या रहें नंगे शरीर।
स्वप्न में भी हम विदेशी काम लायेंगे नहीं॥
गालियां देंगे फिरंगी मार भी देंगे अगर।
चूं नहीं बोलेंगे हम लाठी चलायेंगे नहीं॥
तोप अरु तलवार है मैशींनगन चरखा यही।
हम चलायेंगे यही अंगुली दिखायेंगे नहीं॥
यह मेरा चरखा यहाँ से चरखा लगा देगा वहाँ।
हम हुवे स्वाधीन जब वह चैन पायेंगे नहीं॥
भाइयों से मेल कर पञ्चायतें बैठाय कर॥
मेल कर "शैलेन्द्र" हम दंगा मचायेंगे नहीं॥

देशभक्तों की पहिचान

[ग़ज़ल ५२]

वतन जो बने दीवाने तेरी उल्फ़त में रहते हैं।
न वह मन्दिर में रहते हैं न वह मसज़िद में रहते हैं॥
भलाई ख़ल्क की करना यही रोज़ा नमाज़ उनका ।
न वह सन्ध्या में रहते हैं न वह तर्पण में रहते हैं॥
बयां करना वतन के दर्दे दिलका काम है उनका।
सिवा इसके किसी किस्से को सुनते हैं न कहते हैं॥
वतन पर उनके आफ़तगर कहीं से आती है।
तो सर हिम्मत हटा औरों के पीछे आप सहते हैं॥
अगर माता के चरणों पर चढ़ाने की ज़रूरत हो।
हथेली पर लिये "शैलेन्द्र" सर तैय्यार रहते हैं॥

हिन्दू मुसलिम आदर्श प्रेम

हमारा मिलन मंदिर

[ख्याल ५३]

कैसा सुन्दर समय आज है ? हम अनेक थे एक हुवे ।
सोतेथे, तो जागगये लो ! अब सचेत सविवेक हुवे ॥
समबेदना सहानुभूतिने हमको आज जगाया हैं ।
स्वागत !! स्वागत बन्धु बर्ग हैं !! जननी ने अपनाया हैं ॥
देशभक्ति जो दन्डनीय हैं तो हम शीश चढ़ावेगे ,
कारागृह के दुक्ख झेलेंगे धन्य धन्य कहलावेगे ॥

आभा नहीं विधि रत्नो को यह सुरम्य मंजूर है।
सुखद स्वराज्य सूर्य्य के पहिले आने वाली ऊषा है॥
है निराज 'तो अब" पावस ने चातक प्यास बुझावेंगे
"पतझड़" है तो फिर "बसन्त के दिनभी जल्दी आवेंगे।
दमन नीति से क्या दब सकता यह पावम अदम्यउत्साही॥
बालूके बंधन से भी क्या रुक सकता है बारि प्रवाद।
बिपदायें आती हैं आवें उनकी क्या परवाह हमें।
हम हैं अटल लक्ष्य ऊंचा है, दिखलावेगी राह हमें॥
मन बच कर्म प्राण प्रण से हम अपने को अपनावेंगे।
सुख स्वराज्य को भरतभूमि पर लावेंगे फिर लावेंगे॥
मन्दिर में हो मोहम्मद मसजिद में श्याम देखे।
तब देश का भला हो झगड़ा तमाम होवे॥
डमरू भी शम्भु तेरा पढ़ता दुरूद होवे।
शङ्खोके नाद में भी होती अजान होवे॥

हिन्दू मुसलिम आदर्श मेल

[क़व्वाली ५४]

मुरली तुम्हारी मोहन कमला सुना रही हो।
मुल्ला की बाँग में फिर गोविन्द गान होवे॥
गीता का पाठ मुल्ला करते हों भोर उठके।
पण्डित की पोथियों में पहिली कुरान होवे॥
जब ईद का सवेरा आवे अगर कभी तो।
गो की जगह गोपाला कुरबान जान होवे॥
काली की भेंट को जब बकरा मगांये कोई।
गरदन झुकाये आये बैठा पठान होवे॥

तस्वी के दाने २ जुन्नार में बंधे हों।
हिन्दू रहीम रब हो मुसलिम का राम होवे॥
हिन्दू का दण्ड होवे मुसलिम की वैजयन्ती।
"शैलेन्द्र" देश का यूं उड़ता निशान होवे॥

हिन्दू मुसलिम एकता पर

[ग़ज़ल ५५]

खुदा करे यह दिलो प्यार बर करार रहे।
हिनूदो मुसलिमों में बाहम एतबार रहे॥
हो ईत्तफाके मोहब्बत का ये असर दिलदार।
कि भाई भाई पै जी जान से निसार रहे॥
जरा भी हो नहीं परवाह जेल जाने को।
बला से बेड़ियों की पैरों में झनकार रहे॥
खुशी से पाते हो दोनों वतन का परवाना।
हरेक भारती सर देने को तैय्यार रहे॥
अजान मन्दिरों में गूंजे शंख मसजिद में।
रहीशो राम की हर सोने में पुकार रहे॥
है चाह माधो की पंजाबो खिलाफतकी कसम।
इस इत्तफाक की दुनिया को यादगार रहे॥

हिन्दू मुसलिम मेल

[ग़ज़ल ५६]

किसीने पाई फतहयाबी, किसीने क़ौमी जवाल पाया।
खुदा की कुदरत है खोया हमने,
हजारों बरसों का लालपाया॥

किसी ने हासिल की नेकनामी,
किसीने कामिल क़मालपाया।
है हिन्द तू खुश नसीव जिसने,
ये सीमोज़र वे मिसालपाया॥
खुदायां तेरी है मिहरबानी,
ये जलवातेरा हुआ नुमांया।
न थी जो माधो कोशय मुअस्सर,
अवश उसेला मुहालपाया॥

वतन एक ही है

(कव्वाली)

हिन्दू मुसलिम हों चाहे दो पै वतन एक ही है।
दोनों के वास्ते डायर की भी गन एक ही है॥
एक ही मांके हैं आगोश में बैठे दोनों।
सरपै दोनों के मियां चर्ख़ कुहन एक ही है॥
एक ही ख़ाक से पैदा हुवे हिन्दू मुसलिम।
एक है सबकी खुशी रन्जो महन एक ही है॥
लुत्फ़ दिखलाया है आपस की मोहब्बत ने ये क्या।
शेर दो रहते हैं मिल जुल के गो बन एक ही है॥
गान्धी, वारी, अली भाई, लाल, मालविया।
लाल सदहा हैं मगर मुल्के अमन एक ही हैं।
कोई, कुमरी कोई बुल बुल कोई कोयल हो भले।
मरने जीने को वले सबके चमन एक ही हैं।
दम घुटा जाता है फरियाद भी कर सक्ते नहीं।
लाख शिकवे हैं मगर आह दहन एक ही हैं॥

मुख्तलिफ़ रंगो मज़ामीं हों मुसाफ़िर चाहे ।
तेरा हर हाल में पर तर्ज़े सखुन एक ही है ॥

दूध पानी की प्रीति

(ख्याल)

पानीपयवत् गर प्यार प्रीति की रीति सीख लें आपसभी ।
तो मात्र भूमि दुखियारी के दुःख द्वन्द दूर हों साफ़ अभी ॥
जब दीन हीन पानी बेचारा शरण दूध की आता है ।
नहीं दूध करे दूर २ छी २ निज अङ्ग समझ अपनाता है ॥
अपना सफेद रंग पानी को प्रदान कर गले मिलाता है ।
जिस भाव आप खुद बिकता है उस भावहि उसे बिकता हैं ॥
गुण ग्रहण दूध का करते ही पानी पयवत् बन जाता है ।
नीचों के ऊँच उठाने का क्या आला सबक़ सिखाता है ॥
इक हलवाई के हाँथों से जब भट्टी पर चढ़ जाते है ॥
उस वक़ मुसीबत में दोनों क्या मित्र भाव दर्शाते हैं ॥
जब आग धधकने लगी खूबऔर जलने की नौबत आई ।
हिम्मत करके यह बात दूध से पानी ने तब फर्माई ॥
मैं हूँ मौजूद कढ़ाई में तब तक तुम मत परवाह करो ।
ये दुग्ध देव सानन्द रहो बैठो मत मुँह से आह करो ॥
दुग्ध मित्र को रखा सुरक्षित खुद को जलने जला दिया ।
प्रेम सहित अपनाने का यह बदला कैसा भला दिया ॥
पृथकत्व सहन कैसे करता पय पानी प्राण पियारे का ।
जब बिछुड़ गया इक मित्र हाय कुसमय में आज बिचारे का ॥
बस चला उबल होकर बेकल मैं भी जलकर मर जाऊँगा ।
चल बसा मित्र मैं ज़िन्दा रह कर के क्या मुँह दिखलाऊँगा ॥

जब हलवाई ने लखा दूधने हो बेचैन उबाल लिया।
झट समझ गया दिलकी हालत इक चुल्लू पानी डाल दिया॥
थोड़ा सा पानी पड़ते ही बस दूध शान्त हो जाता है।
बिछुड़ा भाई मिल गया प्रेम से हंस २ गले लगाता है॥
जब इस प्रकार से आप परस्पर प्यार और प्रीति दिखायेंगे।
और अछूत हिन्दू बच्चों को निज अंग समझ अपनायेंगे॥
कर छुआ छूत का भूत दूर सर फोड़ फूट हत्यारी का।
ऋण उतार दो अब आर्य पथिक और दयानन्द ब्रह्मचारी का॥
मैं ऊंचा हूँ वह नीचा है जब यह विचार उठ जायंगे।
निश्चय समझो भारत भूमि के फेरि वही दिन आयेंगे॥

हिन्द वीरों की जाग्रति से दूसरों को डर

(ग़ज़ल)

भारत में नई जान यकायक जो आगई।
सूरत पैं दुश्मनों के हवाई सी छागई॥
जिसदिन मिले हिनूद मुस्लमा गले गले।
उसदिन से गुनहगारों में दहशत समागई॥
हालां कि गोलियां चलीं गोले बरस गये।
फल ये हुआ यक जान में सौ जान आ गई॥
कुछ दिन से जो मरने से डरा करता था भारत।
मरना उन्हें वतन पै ये ज़ुल्मत सिखागई।
"माधो" ये दुआ करता शहीदाने खुशरहो।
कुर्बानियां तुम्हारी हमें जन्नत दिखा गई॥

क़िस्मत जुदा २ है

[क़व्वाली]

दो फूल साथ फूले क़िस्मत जुदा २ है।
एक क़ब्र पै चढ़ा है नोशे के एक बंधा है॥
दो मुर्ग़ असीर आये देखो नसीब उनके।
एक सदके में पड़ा है एक ज़िवह हो रहा है॥
एक हि शज़र की शाखें एक साथ दोनों काटी।
एक आग में जलादी एक का बना असा है॥
दो भाइयों को देखो आपस में हैं हक़ीक़ी।
एक शाहे नामवर है दर २ का एक गदा है॥
एक हि सदफ़ से मोती एक साथ दोनों निकले।
एक घिस गया खरल में एक ताज में टका है॥
हंसता गया मुसाफिर एक रोके कह रहा है।
ऐ ईद तूने मेरे दिल को जलादिया है॥

॥ ॐ ॥

❀ वन्देमातरम् ❀

भारत सपूतो उठो ! अपने कर्तव्य को समझो !! देश की सेवा करो !!!

जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं नर पशु निरा है और मृतक समान है ॥
अन्धकार है वहां जहां आदित्य नहीं है।
मुर्दा है वह देश जहां साहित्य नहीं है ॥

प्रिय पाठको !

संसार में जाति अथवा देश की उन्नति तथा अवनति करने के हेतु उस जाति अथवा देश का इतिहास एवं साहित्य ही मुख्य साधन हुआ करता है। जिस जाति का इतिहास एवं साहित्य सच्चा और बीरता पूर्ण विद्यमान रहता है, संसार में वही जाति सर्वोपरि उन्नति के शिखर पर चढ़ा करती है, और जिसका सच्चा इतिहास ही लोप हो जाता है संसार में वही जाति अधोगति के गड्ढे में गिरकर पद्दलित हुआ करती है।

कहने का तात्पर्य यह है कि किसी जाति अथवा देश की उन्नति या अवनति का दारोमदार उस देश के इतिहास एवं साहित्य के ऊपर ही निर्भर है ! अतः इतिहास एवं साहित्य का सुरक्षित रखना और सच्चे इतिहास एवं साहित्य का प्रचार करना परमावश्यक है। जिन देशों का साहित्य एवं

इतिहास सुरक्षित रहा है वे देश गिरते २ आज भी संभल गये हैं, जैसे अमरीका, जापान इत्यादि !

और जिन देशों का सच्चा इतिहास व साहित्य ही मिट गया है वे देश आज भी संसार में पद्दलित और तिरस्कृत हो कर अधोगति को पहुँच चुके हैं. जैसे हमारा भारत-वर्ष ! भारत की आधुनिक अधोगति का मुख्य कारण भी (जहाँ तक हमने अनुसन्धान तथा विचार किया है) प्राचीन सच्चे इतिहास एवं साहित्य का लोप हो जाना ही है । इसमें सन्देह नहीं कि विदेशियों ने भारत के प्राचीन पवित्र इतिहास एवं साहित्य पर कुठाराघात कर मटियामेट तथा कलङ्कित करने और लांच्छन लगाने में कोई कसर उठा नहीं रक्खी ! इतना ही नहीं जहां तक उनसे हो सका उन्होंने हमारे सच्चे पवित्र इतिहास एवं साहित्य पर भरसक पानी भी फेरा ।

परन्तु ध्यान रहे किसी भी वस्तु का वीज नष्ट नहीं हुआ करता । इस सिद्धान्तानुसार प्राचीन इतिहास एवं साहित्य के नष्ट करने तथा जलाने पर भी कुछ न कुछ चिन्ह स्वरूप आज भी बाकी हैं ! यही कारण है कि भारत की अधोगति होने पर भी आज पर्यन्त भारत वासियों में अनेक ऐसी बातें पाई जाती हैं जो दूसरे देशों के जन साधारणों में नाम मात्र भी नहीं मिलती ! हां प्राचीन उन्नति के मुकाबिले में तो इस समय भारत की अवश्य ही अवनति हुई है परन्तु इस अवनति पर सोच करना व्यर्थ है ।

कालचक्र की गति के अनुसार गिरना उठना यह तो लगा ही रहता है क्योंकिः—

उन्नति तथा अवनति प्रकृति का नियम एक अखण्ड है ।
चढ़ता प्रथम जो व्योम में गिरता वही मार्तण्ड है ॥

अतएव अवनति ही हमारी कह रही उन्नति कला।
उत्थान ही जिसका नहीं उसका पतन हो क्या भला॥
होता समुन्नति के अनन्तर सोच अवनति का नहीं।
हां सोच तो है जो किसी की फिर न हो उन्नति कहीं॥

बस उपरोक्त ईश्वरी नियमानुसार ही भारत को पुनः असली स्वरूप में लाने के हेतु अतिकाल से हम लोगों की हार्दिक अभिलाषा थी कि मातृ भाषा हिन्दी में एक नवीन उच्च कोटि का मासिक पत्र और ग्रन्थमाला प्रकाशित की जाय जिसमें समयानुसार समय समय पर भारत सन्तानों के सोये हुये सद्भावों को जागृत करने के हेतु उत्तमोत्तम भावपूर्ण लेख, कविता इत्यादि छपा करें। अपनी इस शुभेच्छा की पूर्ति के हेतु गत वष हम लोगों ने पत्र का समस्त प्रबन्ध भी कर लिया था, और पत्र प्रकाशित कराने वाले ही थे कि इसी दौरान में हम लोगों के ऊपर सरकार की विशेष कृपा दृष्टि हुई! और हमारे मुख्य कार्य कर्ताओं में से कई सज्जनों को नौकरशाही १२४ धारानुसार महामान्य सम्राट् के घर का निमन्त्रण पत्र देने के अतिरिक्त एक एक वर्ष कारावास का दण्ड देकर अब उन्हें और भी परमोत्साहित कर दिया है। बस इसी कारण गत वर्ष तो हमारी इच्छाओं पर पानी फिर गया था। परन्तु अब ईश्वर की कृपा से हमारे कार्य कर्त्तागण एक एक वर्ष कृष्ण भवन में कठिन तप करने के पश्चात् कर्मयोगी बन कर वापिस आ गये हैं। और देश तथा मातृ भाषा की सेवा करने के हेतु कार्य क्षेत्र में उतर पड़े हैं! इसी से हमें अब पुनः नये सिरे से अपनी शुभाभिलाषा के पूर्ण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। और अनेक महानुभावों के सानुरोध करने पर हमने इस कार्य में अपने जीवन लगाने का निश्चय

कर लिया है। इतना ही नहीं बल्कि प्रत्यक्ष रूप से काशी में "नवयुवक महामण्डल" की स्थापना कर के, उसी के अन्तर्गत कार्य करना भी प्रारम्भ कर दिया है। भारत की वास्तविक प्राचीन ऐतिहासिक अपूर्व छटा का दिग्दर्शन करने, तथा भारतसन्तान के सोए हुए सद्भावों को जगाकर पुनः सञ्चरित करने; और कर्म योगी बन कर निज कर्तव्य पालन करने के हेतु, हमने काशी से "नवयुग" नामक हिन्दी में उच्च-कोटि का आदर्श सचित्र मासिक पत्र निकालना प्रारम्भ किया है, जिसमें ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, धार्मिक, कलाकौशल, स्त्री शिक्षा सम्बन्धी, स्वराज्य विषयक, उपन्यासिक, नाटक, गल्प, व्यङ्गोक्ति, इत्यादि इत्यादि समयानुसार सभी प्रकार के लेख तथा कवितायें छपती हैं। आकार प्रकार सरस्वती का सा है। इतने उत्तम सचित्र मासिक पत्र का मूल्य भी सब साधारण की सुबिधार्थ केवल ४॥) साढ़े चार रुपये मात्र ही रक्खा है। पत्र नियमित रूप से प्रत्येक मास के अन्त में ठीक समय पर प्रकाशित हो जाता है। संसार के सभी सुप्रसिद्ध लेखकों के लेख इस "नवयुग" पत्र में छपते हैं। अतः आप भी आज ही वार्षिक पूरा अथवा अर्ध मूल्य अग्रिम मनोयार्डर द्वारा भेज-कर ग्राहक बन जाइये अथवा ॥) आठ आना के टिकट भेज कर नमूने का अंक मंगा लीजिये। स्मरण रहे! "नवयुग" के समस्त ग्राहकों को वर्ष के अन्त में एक वार उनकी इच्छानु-सार "नवयुग ग्रन्थमाला" की कोई भी दो पुस्तकें उपहार स्वरूप में भेंट की जायंगी।

२—साधारण जनता के सन्मुख समयानुसार उत्तमोत्तम भावों को रखने के हेतु हमने "नवयुग ग्रन्थ माला" के नाम से एक ग्रन्थ माला भी निकालना प्रारम्भ किया है, जिसमें

समय तथा आवश्यतानुसार विविधि विषयों से विभूषित हिन्दी की पुस्तकें प्रकाशित कर अल्प मूल्य में सर्व साधारण की भेंट की जाती हैं। ग्रन्थमाला में आठआना अग्रिम प्रवेश शुल्क देने पर स्थाई ग्राहक बनाये जाते हैं! कौंग्रेस कमेटियों, किसान सभाओं,सेवा सम्मतिओं,आर्य समाजादि संस्थाओं को वितीर्णार्थ आधक पुस्तके मंगाने पर तथा स्थाई रूप से "नवयुग" मासिक पत्र के ग्राहकों तथा विद्यार्थियों को समस्त पुस्तकें पौने मूल्य में दी जाती हैं। देश के नाते हमारी आपसे सादर प्रार्थना है कि आप इस ग्रन्थमाला के स्थाई ग्राहक बन कर और दूसरों को बनाकर देश के कार्य में हाथ बटावें।

ध्यान रहे! "नव युग ग्रन्थमाला" और "नवयुग" मासिक पत्र द्रव्योपार्जन अथवा व्यापारिक इच्छा से नहीं वरन हिन्दी प्रचार तथा स्वदेश सेवार्थ ही निकाले गये हैं। आप विश्वास रखिये! उपरोक्त दोनों कार्यों से यत्किञ्चित जो कुछ भी आय होती है, वह सब देश सेवार्थ ही व्यय की जाती है। अर्थात इस आय से मेलों तथा ग्रामों में निर्धन मनुष्यों को बिना मूल्य पुस्तके बितीर्ण कराई जाती है। ग्रामों में उपदेशक, भजनीकों से भारत सुधारसम्बन्धी व्याख्यानों तथा भजनों द्वारा प्रचार कराया जाता है, और यथा समय आवश्यक्तानुसार इसी भांति से हिन्दी तथा देश सेवा के अनेक कार्य किये कराये जाते हैं।

देश के इस महान कार्य में हमारा हाथ बटाना आप का परम कर्तव्य है।

अतः आप हमारी पुस्तकों और मासिक पत्र के ग्राहक बना कर प्रचार करें।

और लेख कविता इत्यादि लिख कर प्रकाशनार्थ हमारे पास भेजने की कृपा करें।

"नवयुग" के स्थाई ५ पांच ग्राहक बनाने वाले महानुभावों को छै मास और १० दस ग्राहक बनाने वाले महानुभावों को एक वर्ष पर्यन्त "नवयुग" मासिक पत्र बिना मूल्य दिया जायगा। इस के अतिरिक्त लेख, कबिता इत्यादि सर्वोपरि होनेपर वर्ष के अन्त में लेखकों को उचित पुरस्कार, पदक इत्यादि भी दिये जायंगे।

हमें पूर्ण आशा है कि आप यथाशक्ति, यथायोग्य लेखादि से अथवा ग्राहकादि बनाकर देश के इस महान कार्य्य में हमें सहायता प्रदान करेंगे।

हमें दृढ़ विश्वास है कि आप यथा/शक्ति इस कार्य में हमारा हाथ वटाकर स्वदेश सेवा तथा परोपकार करते हुए यश और पूण्य के भागी बनेंगे।

निवेदकः—

भवदीय
मंत्री नवयुक महामण्डल
काशी

व्यवस्थापक
प्रकाशक विभाग,
नवयुक महामण्डल
काशी।

ॐ

लेखक तथा सम्पादक के कार्य्यक्रम की पद्धति

भारतीय राष्ट्र निर्माण के लिये सदैव प्रयत्न शील रहना अर्थात् भारत में राष्ट्रभाषा हिन्दी एवं राष्ट्र धर्म का प्रचार करना। हिन्दु मुसलमानों में सच्चा क़ौमी मेल सदैव बनाये रखने का प्रयत्न करना, और भारत के कोने कोने अर्थात् बड़े बड़े शहरों के महलों से लेकर ग्रामों के टूटे फूटे खँडहरों तक में भी स्वराज्य तथा कांग्रेस के भावों का प्रचार करना। शहर तथा ग्रामों में, धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक, कुरीतिनिवारण स्त्री सिक्षा, अनाथरक्षा इत्यादि विषयों में समयानुसार वक्तृता गान एवं लेखों, पुस्तकों और समाचार पत्रों द्वारा राष्ट्रीय एवं धार्मिक भाव भर कर भारत के प्रत्येक बच्चे बच्चे को स्वात्मावलम्बी एवं कर्मयोग पथ गामी बनाना है।

पत्र व्यवहार का पता—

व्यवस्थापक

"हिन्दी नवयुग" कार्य्यालय

काशी